मस्जिद की जिम्मेदारी उठाते हैं शर्मा जी

आज से करीब 300 वर्ष पहले नया टोला आलमगिरिगंज निवासी पंडित दासीराम शर्मा ने खंडहरनुमा मस्जिद का पुनर्निमाण कराया था। इसे शर्मा जी की मस्जिद या बुध वाली मस्जिद भी कहा जाता हैं। मान्यता है कि यहां जो भी लगातार सात बुधवार को इबादत के लिए आता है, उसकी मन्नत पूरी होती है। आज भी इस मस्जिद की एक चाबी शर्मा जी के वंशज संजय शर्मा के पास रहती है।

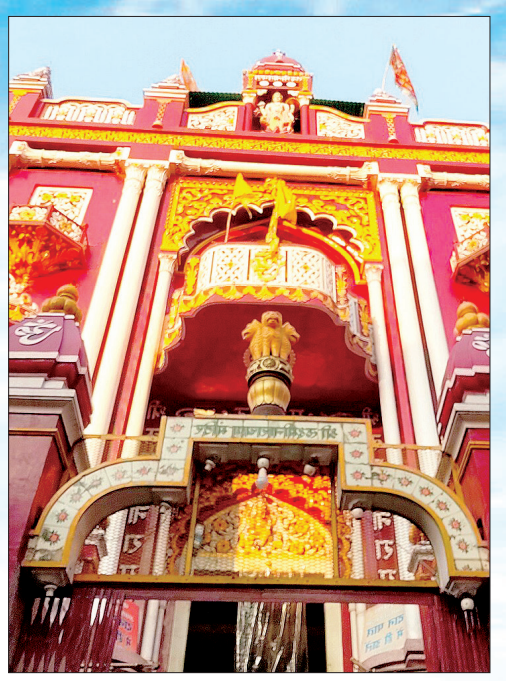

गंगा-जमुनी तहजीब को आगे बढ़ा रहा
चुन्ना मियां का मंदिर

बरेली गंगा-जमुनी तहजीब वाला शहर है। इस तहजीब को कटरा मानराय का लक्ष्मी नारायण मंदिर आगे बढ़ा रहा है। सबसे मुख्य बात यह है कि इस मंदिर को शहर के सेठ फजलुर्रहमान उर्फ चुन्ना मियां ने अपनी जमीन दान में देने के साथ पैसा देकर बनवाया था। इस वजह से इस मंदिर का नाम चुन्ना मियां भी पड़ गया और अब यह मंदिर चुन्ना मियां के नाम से भी प्रसिद्ध है। पास में ही आलमगीरीगंज में राजेंद्र शर्मा एक मस्जिद के केयर टेक हैं। यहां की गलियों में एक तरफ आरती की धुन सुनाई देती है, तो दूसरी ओर अजान होती है। दोनों जगहों से सौहार्द के सुर निकलते हैं, उससे शहरवासी सुकून महसूस करते हैं।

– अभिषेक मिश्रा, बरेली

मुनि हरिमिलापी ने किया था चुन्ना मियां का हृदय परिवर्तन

कटरा मानराय में भारत पाकिस्तान के विभाजन के बाद भारत आए सिंधी, हिंदू, पंजाबी परिवार के लोग यहां आकर बस गए। वह यहां आकर रहने लगे, लेकिन उनके पास पूजा-पाठ करने के लिए कोई मंदिर नहीं था, जिसके बाद उन्होंने चुन्ना मियां की खाली पड़ी जमीन पर ही मूर्ति रखकर पूजा-पाठ करने लगे थे, जिसके बाद इसका विरोध चुन्ना मियां ने किया। इसके लिए कानूनी कार्रवाई तक की गई। चुन्ना मियां उनकी जमीन पर मंदिर बनाए जाने के खिलाफ थे, लेकिन मुनि हरिमिलापी के बरेली आने पर सेठ फजलुर्रहमान उनसे मिलने आए थे, तब उन्होंने उन्हें समझाया कि सभी प्राणी प्रभु के हैं। शरीर की मंजिल शमशान है और जीवात्मा की मंजिल भगवान है, जिसके बाद उनका हृदय परिवर्तन हुआ और मंदिर के लिए जमीन दान दे दी। साथ ही मंदिर निर्माण के लिए डेढ़ लाख रुपये लगाकर अपनी जगह पर मंदिर बनवाया। मंदिर बनाने में चुन्ना मियां ने श्रम दान भी किया। मुनि हरिमिलापी ने ही फजलुर्रहमान को फजले राम बनाकर असीम प्यार दिया।

चार बेटों में अतीकुर्रहमान और अताउर्रहमान ही आते हैं मंदिर

सेठ फजलुर्रहमान के चार बेटों में से अतीकुर्रहमान, अताउर्रहमान ही मंदिर में कभी-कभी पहुंचते हैं, जिसमें अतीकुर्रहमान के दोनों बेटे रामपुर में रहते हैं। वहीं अताउर्रहमान के इकलौते बेटे शकेब रहमान बरेली में निवास करते हैं। शकेब ने बताया कि वह रोज मंदिर नहीं पहुंच पाते हैं। हरिमिलाप ट्रस्ट के लोगों के आने पर वह अक्सर मंदिर जाते हैं। उन्होंने बताया कि उनके दादा ने मंदिर के अलावा शहर में कई जगह जमीन के साथ ही स्कूल-कॉलेजों में भी दान किया था।

तत्कालीन राष्ट्रपति ने किया था मंदिर का उद्घाटन

मंदिर के पुजारी प्रमोद मिश्रा ने बताया कि तत्कालीन राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद ने मंदिर का उद्घाटन किया था। उस समय राष्ट्रपति ने हरिमिलापी जी की प्रशंसा करते हुए कहा था कि आपने हिंदु-मुस्लिम की एकता सुदृढ़ करने वाले मंदिर का निर्माण करवाया है। फजलुर्रहमान ने यह मंदिर बनवाकर अपना नाम इतिहास में दर्ज करा लिया। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इसके लिए ईराक से संदेश भेजा था। चुन्ना मियां के पौत्र शकेब रहमान ने बताया कि उन्होंने सुना है कि उस समय प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लान नेहरू ने उनके दादा के लिए राज्यसभा की सीट देने का प्रस्ताव दिया था, लेकिन उन्होंने राजनीति में जाने से मनाकर दिया था।

अनुभूति
जीवन का आनंद बागबानी

श्रुति सुकुमार
लेखिका, बरेली

मैंने कुछ समय पहले अपनी बगिया में टमाटर के पौधे लगाए, करीब एक-दो महीने बाद उन पर नन्हें-नन्हें टमाटर आना शुरू हो गए हैं, यकीन मानिए उन्हें देखकर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। इन टमाटरों के स्वाद में और बाजार की मिलावटी खाद से उगे टमाटर के स्वाद में धरती- आसमान का अंतर था। इतना सुखद एहसास कि मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकती। इस सुकून को तो केवल वही समझ सकता है, जिसने खुद बागवानी का अनुभव किया हो। बागवानी न केवल हमारी बगिया को खूबसूरत बनाती है, बल्कि हमें खुशी भी प्रदान करती है और तो और शोध यह भी बताते हैं कि बागवानी करने से हमारे स्वास्थ्य में भी सुधार आता है। बागवानी करने से डिप्रेशन, एंजायटी व अनिद्रा की समस्या भी दूर होती है। क्योंकि हमारा शरीर जिन पांच तत्वों से मिलकर बना है, उसमें एक तत्व पृथ्वी भी है और मिट्टी के स्पर्श से हमें आत्मिक एक रसता होने की अनुभूति होती है। पेड़-पौधों में भी प्राण होते हैं और उन्हें छूने से, उनके साथ रहने बैठने से हमारी प्राण शक्ति भी बढ़ती है। मनुष्य और पेड़-पौधे एक दूसरे को आदान-प्रदान भी करते हैं। जैसे हमें ऑक्सीजन की जरूरत होती है उसी प्रकार पौधों को कार्बन डाइऑक्साइड की। इस प्रकार हमारा पेड़-पौधों से एक तरताम्य सा बन जाता है। एक जुड़ाव सा हो जाता है। अत : हम अपने लॉन, बगीचे या बालकनी को फूलों से, पौधों से और पेड़ों से सजाएं। आप चाहे तो सर्दियों में उगने वाले खास सजावट के फूल जैसे गेंदा, सूरजमुखी, गुलदावरी, गुलाब भी लगा सकते हैं, जिससे आपके बगीचे में रौनक भी आ जाएगी और आपके घर के प्रभामंडल में अच्छा सुधार आएगा व नकारात्मक उर्जा भी नहीं रहेगी, जिससे आपका मन प्रफुल्लित रहेगा और सर्दियों के इस अधमने मौसम में भी आप फूलों की तरह खिले-खिले नजर आएंगे। सांसों के माध्यम से जब शरीर के भीतर फूलों की खुशबू जाएगी तो स्वत : ही स्वशन प्रणाली मजबूत होगी वह हमारा मन और मस्तिष्क भी प्रसन्न रहेगा। यकीन मानिए अगर आप एक घंटा बागवानी के लिए निकालते हैं, तो निश्चित रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आएगा व मानसिक चिंताओ से मुक्ति मिलेगी। इससे आपकी हॉबी भी पूरी होगी व आप अपने आप को समय भी दे पाएंगे, साथ ही आप सकारात्मक ऊर्जा से अपने आप को भरपूर पाएंगे।

मोहन राकेश की अद्भुत कलात्मक क्षमता

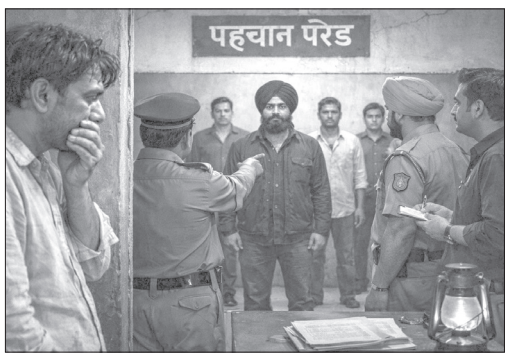

सुभाष बाशी अपनी प्रेमिका मिन्नी से मिलकर ऑटो रिक्शा से वापस आता है। रास्ते में एक बर्फ की दुकान खुली नहीं थी सो वह लौट आया, लेकिन तब तक देखा एक सरदार जी उस रिक्शे में बैठ गए। उसके मना करने पर लहीम-शहीम सरदार जी ने पहले उसे धमकाया, फिर चाकू निकालकर गाली बकते हुए उसे दौड़ा लिया और वह यानी बाशी भागता हुआ किसी गली में घुस गया। उसके बाद जिस महेंद्र नामक व्यक्ति के यहां वह रहता है, उसके बहुत अधिक दबाव डालने पर पुलिस में रिपोर्ट नहीं करना चाहा, लेकिन एक परिचित रिपोर्टर ने यह खबर छाप दी और फिर उस सरदार जी यानी नत्था सिंह को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उसके बाद इस नत्था सिंह की शिनाख्त करने का खतरनाक कार्य करने पर बाशी को मजबूर किया जाने लगा। देखने में साधारण सी घटना लग सकती है, पर कहानी जैसे-जैसे आगे बढ़ती है वैसे ही इस कथ्य का साधारण रूप असाधारण बनने लगता है।

■ यदि शुरुआत से देखें तो पहली पंक्ति ही कितनी मारक है, 'अजीब बात थी, खुद कमरे में होते हुए भी बाशी को कमरा खाली लग रहा था' बाशी के साथ जो कुछ हुआ उसने उसके अंदर यह एहसास भर दिया कि उसका वजूद बिल्कुल शून्य है। उसका जिंदा होना या न होना इस समाज, देश के लिए कोई महत्व नहीं रखता है। एक आम आदमी का जीवन जीना किस कदर यंत्रणादायक हो जाता है। यह बाशी अच्छी तरह समझ चुका था तभी उसे लग रहा था कि वह जहां है, वहां नहीं है। उससे तो अधिक महत्वपूर्ण थीं, उस कमरे की दीवारें, मेज और कुर्सियां। व्यक्ति का किसी जगह पर होना तभी सार्थक होता है जब वह अपनी उपस्थिति को महसूस करे। जैसे बाशी कमरे में है, किंतु अपनी उपस्थिति को अनुभव नहीं कर पाता इसलिए उसे वह कमरा खाली लगता है। अपने इसी खालीपन के कारण उसे समय का भी सही अंदाजा नहीं हो पा रहा था। उसे कभी लगता जैसे समय बहुत जल्दी बीत रहा है और कभी लगता बहुत धीरे-धीरे। उसके भीतर का डर वास्तव में चाहता है कि समय वहीं थम जाए, क्योंकि अगर ऐसा नहीं हुआ, तो एक समय ऐसा आएगा जब वह खतरा उसके सामने आकर खड़ा हो जाएगा। जब उसके भीतर का आम आदमी अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए उठकर खड़ा होना चाहता है तब उसे लगता यह सब नाटक हो रहा है। यदि व्यवस्था उसके भीतर के आम आदमी के पक्ष में होती तो उस चाकू वाले को उपयुक्त सजा मिल गई होती और उसके भीतर किसी भी प्रकार का डर जगह न बनाता। ऐसे में उसे समय बहुत देर से गुजरता हुआ लगा। वह यदि कोई बड़ा मंत्री होता या कोई शक्ति संपन्न व्यक्ति तो क्या इस तरह डरता हुआ इस कमरे में बैठा रहता?

श्याम सुंदर चौधरी
कानपुर

'हथेली पर बने शब्द इतने अधिक हो गए कि सब मिलकर आढ़ी-तिरछी लकीरों का एक गुंजल्क बन गए, जो पूरी तरह मिट नहीं सके" ठीक उसी तरह समाज, व्यक्ति की स्वतंत्रता, कानून, सुरक्षा, आदि शब्दों के बीच एक साधारण सा जीवन जीने वाला आम आदमी छटपटा रहा है। कई बार उसे लगता है कि यह देश उसके लिए नहीं है। इस समाज में यहां की सड़कों, दुकानों और बाजारों पर बार-बार अपमानित होना ही उसके जीवन का एक बहुत बड़ा सत्य है और इस भयानक सत्य से आम आदमी को निजात दिलाने के लिए जो भी संस्थाएं बनी हैं, वो शक्ति संपन्न लोगों के लिए हैं, उसके जैसों के लिए नहीं।

■ पुलिस वाले भी उसे कभी डराते हैं, तो कभी हतोत्साहित करते हैं। थानेदार ने कहा, 'हां, हां, रिपोर्ट आपको जरूर लिखवानी चाहिए। इन गुंडों से मत्था लेने में यूं थोड़ा-बहुत खतरा तो रहता ही है और कुछ न करे आप पर एसिड ही डाल दें। ऐसा उन्होंने दो-एक बार किया भी है।' दूसरी ओर डीएसपी का संवाद भी हिम्मत तोड़ने वाला है, 'वह तो बेचारा सिर्फ दलाली करता है' डीएसपी ने जरूरी फाइलों पर दस्तखत करते हुए कहा, 'कत्ल-वत्ल करने का उसका हौसला नहीं पड़ सकता' हम उसके खिलाफ कार्यवाही नहीं करेंगे, आपको डरना बिलकुल नहीं चाहिए।'

■ यहां तक कि चीफ क्राइम रिपोर्टर भी इस मामले में अपनी भूमिका किस तरह निभाता है, जरा देखिए, 'आप पहला काम यह कीजिए कि जाकर अपनी रिपोर्ट वापस ले लीजिए। थानेदार मेरा वाकिफ है, आप चाहें तो उससे मेरा नाम ले सकते हैं कि पंडित माधोप्रसाद ने यह राय दी है। वह अकेला नहीं है। एक बहुत बड़ा गिरोह उसके साथ है। हम लोग उनसे उलझ लेते हैं, क्योंकि एक तो हम इन सबको पहचानते हैं और दूसरे हिफाजत के लिए रिवाल्वर-वाल्वर अपने साथ रखते हैं। ये भी जानते हैं कि जितने बड़े गुंडे ये दूसरों के लिए हैं उतने ही बड़े गुंडे हम इनके लिए हैं। इसीलिए हमसे डरते भी हैं, पर आप जैसे आदमी को तो ये एक दिन में साफ कर देंगे- आपको इनसे बचकर रहना चाहिए।' इस एक पैरा के संवाद में ही उस क्राइम रिपोर्टर का पूरा चरित्र बेनकाब हो जाता है। एक तरफ वह कहता है कि नत्था सिंह जैसे लोग उससे डरते हैं, क्योंकि ऐसे लोग जानते हैं कि क्राइम रिपोर्टर उन लोगों से भी बड़ा गुंडा है, तो फिर क्यों वह बाशी से रिपोर्ट वापस लेने को कहता है? वह रिपोर्टर खुद ही अगर एक बार नत्था को धमका दे तो उसकी हिम्मत नहीं पड़ेगी कि बाशी को हाथ भी लगा सके, लेकिन वास्तव में ऐसा कुछ है नहीं। वास्तव में रिपोर्टर की नत्था सिंह से दोस्ती है।

■ मोहन राकेश जिस तरह के वाक्यों का सृजन करते हैं उसमें एक अद्भुत सा रोमान्टिज्म दिखाई देता है। किसी भी बात को वाक्यों में इस तरह पिरोते थे मानो फुटपाथ पर कोई खूबसूरत नायिका एक सिंथेटिक साड़ी में लिपटी पैदल चली जा रही है और उसके कमर पर पड़ता बल पीछे से देखने वाले की धड़कन बंद कर दे, सम्मोहित कर दे। बाशी के मनोभावों को राकेश ने बहुत खूबसूरती से चित्रित किया है। उसके भीतर का डर, उसके नर्वस ब्रेक डाउन को भी उतने ही प्रभावशाली ढंग से राकेश ने उभारा है, 'कोई चीज हलक में चुभ रही थी-एक नोक की तरह। बार-बार थूक निगलकर उस चुभन को मिटा लेना चाहता। कभी उसे लगता कि किसी हाथ ने उसका गला दबोच रखा है और यह चुभन गले पर कसते हुए नाखूनों की है। तब वह जैसे अपने को उन हाथों से छुड़ाने के लिए छटपटाने लगता।' राकेश की भाषा में सरलता के साथ-साथ जो व्यंजना का मिश्रण रहता है वह उनके समय के किसी और रचनाकार में शायद ही दिखाई पड़ता हो। यह व्यंजना की प्रधानता उनकी भाषा में कहीं भी न तो बनावटी लगती है और न ही ठुंसी हुई, बल्कि प्रेम से पाठक की उंगली थामे वह खूबसूरत भाषा उनकी कहानी के पथ पर सफर करा जाती है।

आपबीती
सेवड़ा किले की वो शाम

अपर कलेक्टर दतिया के पद पर रहते हुए एक दिन सेवड़ा जाना हुआ। सेवड़ा किले में पहुंचते-पहुंचते शाम ढलने लगी थी। इस किले को पहले कभी देखने जानने का अवसर नहीं मिला था। सनकुंआ जल प्रपात की धुंधली यादें स्मृति पटल पर जरूर ताजी थी। सेवड़ा किले को पहले नहीं देखा था। इस किले को देखने की इच्छा आज पूरी हुई। सेवड़ा नगर विंध्यांचल पर्वत श्रेणियों के अंतिम छोर पर सिंध नदी के तट पर स्थित है। कहते हैं कि सन् 1018 ई. में महमूद गजनवी चंदाराय का पीछा करते हुए यहां आ पहुंचा और यहां पर आधिपत्य कर लिया। इसे सरुआ का किला कहा जाता था।

रूपेश उपाध्याय
सागर, म.प्र.

सेवड़ा किले की बुनियाद दतिया के राजा दलपत राय के द्वितीय पुत्र पृथ्वी सिंह ने डाली और इसका नाम किन्नर गढ़ रखा। सेवड़ा उन्हें जागीर में प्राप्त हुआ था। पृथ्वी सिंह का राजकाल सेवड़ा किले में विभिन्न निर्माण, साहित्य और सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से स्वर्णिम काल माना जाता है। इस दौरान किले में नंद नंदन जू का मंदिर, रसनिधि की राउर, दरबार हॉल, रानी महल, फूल बाग आदि का निर्माण हुआ। उनकी कृति रतन हजारा बुंदेली साहित्य की अमूल्य धरोहर है। उनके समय संत अक्षर अनन्य द्वारा अनेक ग्रंथ सेवड़ा में रहकर ही लिखे गए। सन् 1758 ई. में पृथ्वी सिंह की मृत्युपरांत उनके ज्येष्ठ पुत्र नारायण सिंह जू देव सेवड़ा के शासक बने पर उन्हें सिकदार की हवेली में जहर देकर मार डाला गया। उनके छोटे पुत्र विजय बहादुर दतिया के राजा इंद्रजीत सिंह द्वारा किए गए हमले में मारे गए। इंद्रजीत सिंह सेवड़ा किले में लूटपाट की, पृथ्वी सिंह रसनिधि द्वारा स्थापित पुस्तकालय को जलवा दिया। किले को तहस-नहस कर दिया गया। इंद्रजीत के आक्रमण और सेवड़ा विजय से सेवड़ा की स्वतंत्र रियासत का अस्तित्व ही समाप्त हो गया। सेवड़ा को फिर दतिया रियासत के अधीन कर लिया।

इंद्रजीत सिंह के बाद शत्रुजीत सिंह सन् 1762 ई. में दतिया रियासत के शासक बने। उनके शासन काल मे महादजी सिंधिया की वेवा रानियों को लकवा दादा के संरक्षण में सेवड़ा किले में आश्रय प्रदान कर दिया था, जिससे कुपित होकर ग्वालियर के राजा दौलत राव सिंधिया द्वारा सेवड़ा पर आक्रमण कर दिया। यह युद्ध सेवड़ा किले की दीवारों के नीचे लड़ा गया। सिंधिया के फ्रांसीसी सेनापति पैरों इस युद्ध में मारा गया। सन् 1801 ई. में इसी युद्ध मे घायल होकर शत्रुजीत की भी मृत्यु हो गई। सनकादि ऋषियों की तपोभूमि होने के कारण यहां सिंध नदी में स्थित कुंड सनकुआ नाम से प्रसिद्ध है, जहां कार्तिक पूर्णिमा और मकर संक्रांति को विशाल मेला लगता है।

हम सेवड़ा के अतीत से वर्तमान लौट आए। हम किले की ओर बढ़ रहे थे। खंडहर होती प्राचीर के बाद किले के बुलंद दरवाजे ने हमारा स्वागत किया। इस दरवाजे में लगे कीले अब भी अतीत के प्राचीन गौरव को याद दिला रहे थे।

दरकती दीवालों के बीच से होते हुए हम किले के मुख्य भाग में पहुंचे जहां अब भी राजपरिवार निवास करता है। किले से सिंध नदी और दूर-दूर तक फैली विंध्य पर्वत श्रृंखलाएं बड़ी ही मनोरम लग रही थी।

सिंध नदी का अविरल प्रवाह टूटे पुल को पार कर सनतकूप में प्रपात बनकर गिर रहा था। इससे उठ रही लहरे किनारे पर जाकर टूट जाती और फिर इसी पानी में विलीन होती दिख रही थीं। दूर पहाड़ों पर सूर्य की लालिमा फैल गई थी। अब सूर्य अस्त होने को आतुर था। हम महल की छत से उतरकर ड्राइंग रूम में आ गए, जहां सेवड़ा की रानी उमा कुमारी हमारा इंतजार कर रही थी। उनसे भेंट के दौरान किले के अतीत, वर्तमान और भविष्य को लेकर व्यापक चर्चा हुई। उनकी सहजता और सौजन्य से हम अभिभूत थे। रात्रि होने को थी। किले से प्रस्थान का समय हो गया था। सबसे भेंट और अभिवादन पश्चात हम दतिया के लिए रवाना हो गए। सेवड़ा किले की यह शाम बहुत ही खुशगवार रहीं।